International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 23-06-2026, Accepted: 23-07-2026, Published: 07-08-2026
Volume 12, Issue 3, 2026, Page No. 82-84

लल्ली और हब्बा की कश्मीरी कविताओं में प्रेम और आध्यात्मिकता

बीरेन्द्र किस्कु
शोधार्थी, हिन्दी विभाग, विश्व भारती, शांतिनिकेतन, पश्चिम बंगाल, भारत
DOI: https://doi.org/10.66856/ijhr.2026.12.3.12201

सारांश
भक्तिकाल में कबीर, रैदास, तुलसीदास, मीरा जैसे कवि कविमित्री का अविर्भाव हुआ। इन्होंने अपनी भक्तिभावना, तप साहाना, तत्वज्ञान तथा उपदेशात्मक कविताओं से हिन्दी साहित्य को समृद्ध किया और समाज को संदेश दिया। मध्यकालीन समाज में स्त्रियों की दशा काफी दयनीय थी। हालांकि स्त्री समाज की उत्थान के लिए कई प्रयास किये जा रहे थे, उनकी मुक्ति के लिए सशक्त स्व भी उभरा। इसी बीच मीरा जैसी कवयित्री का अविर्भाव हुआ, उनकी कविताओं में स्त्री मुक्ति का स्वर मुखरित हुआ है। जिस तरह ब्रजमंडल में कृश्ण भक्त कवियित्री मीराबाई प्रचलित थी उसी तरह कश्मीर में भौव भक्त योगिनी लल्लेश्वरी (ललद्यद) प्रचलित थी। उल्लेश्वरी के बाद कश्मीर में हब्बा खातून, अरणिमाल, जैसे कवियित्री का आविर्भाव हुआ। इन कश्मीरी कवियित्रियों ने अपने तप साधना ज्ञान तथा प्रेमपरक कविताओं से कश्मीरी साहित्यिक पंरपरा एवं अंततः भारतीय ज्ञान परंपरा को समृद्ध किया। यह भोध पत्र कश्मीरी साहित्यिक परंपरा और उसमें भक्त–सूफी कवि कवियित्रियों की योगदान का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करने का प्रयास है।

मूल शब्दः कश्मीर, साहित्य, कश्मीरी साहित्य, ज्ञान परंपरा, तत्वज्ञान, सूफीमत

कश्मीर की धरती सिर्फ अपनी प्राकृतिक सुशमा के लिए ही नहीं अपितु अपनी समृद्ध प्राचीन ज्ञान परंपरा के लिए भी प्रसिद्ध है। बड़े–बड़े विचारक दार्शनिक, सूफीसंत, साधु सन्यासी, संस्कृत आचार्य कवियों की भूमि है। इन्होंने अपने साहित्य ज्ञान इतिहास दर्शन, कला कौशल के जरिये कश्मीर के सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक विरासत को समृद्ध किया, यह इतिहास सम्मत है कि कल्हण ने यहीं के भुर्जपत्रों पर राजतरंगिणी, एक विशालकाय ग्रंथ लिखा जिसमें कश्मीर के हजार वर्शो के इतिहास का कालानुक्रमिक वर्णन है।

कश्मीर की सूफी परंपरा भारत ही नहीं बल्कि दुनिया में सबसे समृद्ध है। कश्मीर में इस्लाम के प्रचार प्रसार का श्रेय सूफीसंतों को ही जाता है। इन सूफीसंतों भक्त कवियों के वाक् में तत्वज्ञान, भारतीय दर्शन, संस्कृति, समन्वयता, प्रेम, बंधुत्व, आध्यात्मिक रूझानों वाली ज्ञानात्मक संवेदना का स्पश्ट प्रभाव दिखाता है। वाक् (वाचिक साहित्य) श्रुति पंरपरा से एक पीढ़ी से दूसरे पीढ़ी को जाता है और आम जन के बीच प्रचलित रहती या लोक स्मृति में सुरक्षित रहती है।

कश्मीर की भूमि पूर्वकाल में कई सिदू साधक दार्शनिकों तथा इस देश की विशिश्ट संस्कृति का उद्भव स्थान भी रही है। लेकिन दुर्भाग्यवश कश्मीर पर बहुत कम ही भोध कार्य किये गए हैं, जो कुछ उपलब्ध है वो भी छिटपुट। जॉर्ज ग्रियर्सन, बरनेट आदि जैसे कुछ विद्वानों वे कश्मीर पर सराहनीय कार्य किये हैं, इस आलेख में विशेशकर कश्मीर के संत कविनियत्रिक की चर्चा करेंगे जिनका अविर्भाव मध्यकाल में हुआ उन्होंने अपने ज्ञान तप और आध्यात्मिकता से कश्मीरी साहित्य को समृद्ध किया।

कश्मीरी भाशा की प्रथम कवियित्री होने का श्रेय लल्लेश्वरी को जाता है। लल्लेश्वरी (ललद्यद, लल्ली) के कश्मीरी वाक् जो श्रुति पंरपरा से कश्मीरी जनमानस में पीढ़ी दर पीढ़ी रच बस गए थे। लल्लेश्वरी का वाक् तत्वज्ञान समावेश काव्यात्मक पद है जो हिन्दु–मुस्लमान दोनों के जुबान पर छप गए थे। इस कारण हिन्दु हो या मुस्लमान सभी लोगों के बीच उनका सम्मान था।

लल्लेश्वरी का समय कबीर से ठीक थोड़ा पहले था। हिन्दी साहित्य में यह समय भक्तिकाल का था। कबीर, मीरा, सुरदास जैसे कवि कवियित्री का अविर्भाव भक्तिकाल में हुआ। मध्यकाल के इस में स्त्री समाज की स्थिति दयनीय थी। स्त्री समाज में शिक्षा का अभाव था तथा मर्यादा की सीमा में जकड़ी, घर की चारदीवारों में बंद थी। अतः इसी समय स्त्री मुक्ति की प्रबल उत्कंठा जगी। स्त्रियों पर घरेलू कामकाज का संपूर्ण दायित्व तथा पुरूशसत्तात्मक व्यवस्था द्वारा उन पर अत्याचार आम बात थी। मीराबाई की तरह ही लल्लेश्वरी को भी ससुराल में प्रताड़ना मिली। लल्ली की सास उसकी थाली में पत्थर रखकर ऊपर से थोड़ा सा भात छिड़क देती, बावजूद इसके वह शिकायत न करती, उसने एक वाक् में कहा है – ''होड़ मॉरितन या कठ लल्ली नलकठ चलि नूं जांह (चाहे घर में भेड़ कटे या पकवान बने, लल्ली के थाली में पत्थर जरूर होगा)''[1]

लल्ली की भक्ति भावना भी कबीर जैसी थी। उन्होंने भी धार्मिक कर्मकांड, बाह्याडंबरों पूजा–व्रत, बलि प्रथा आदि का विरोध किया– ''दीव वटा दीवर बटा..... मे वह कहती है, देव भी पत्थर, देवल भी पत्थर। रे पंडित! तु किसे पूजता है ? मन और प्राण को एकीकृत कर ले उसी में जीवन का सार है।''[2]

''शाश्वत आंतरिक सुख की प्राप्ति के लिए पारमार्थिक ज्ञान की आवश्यकता रहती है। संतों की अनुभव वाणी ही इस ज्ञान का मूल निहित रहता है। इसलिए परमार्थ मार्ग में भाास्त्र, संप्रदाय या प्रवचन को छोड़कर अनुभव सिद्ध प्रत्यक्ष–ज्ञानी के सत्संग और वाणी को महत्व दिया जाता है। भाास्त्र–पठन से विशय की जानकारी तो होती है लेकिन उसका अनुभव नहीं मिलता। जो ज्ञान अनुभव में परिणत नहीं होता है, वही केवल वाडमय उपदेश का रूप लेता है। अतः विद्वानों की अपेक्षा अनुभवी संतों का प्रभाव जिज्ञासु साधक के मन पर अधिक पड़ता है।''[3]

अतः यह कहना समीचीन होगा कि संतों को ज्ञान की प्राप्ति पठन पाठन से नहीं बल्कि अनुभव जगत से होता है। लल्ली ने तो अपने वाक् में कहा है– ''पढ़ते पढ़ते मेरी जीभ व तालू कट गए, सुबिरनी फिरते अंगुलियाँ घिस गई, पाए मन की द्वैतभावना दूर न हुई, मात्र पोथियाँ पढ़कर ज्ञान प्राप्त नहीं होता।''[4]

लल्ली मूलतः भौव भक्त योगिनी थी। कश्मीरी भौव दर्शन की उत्पति 8वीं भाताब्दी में हुई। कश्मीरी भौव दर्शन प्रत्यभिज्ञा दर्शन कहलाया जो अद्वैतवाद के सिद्धांत को मानता है। अद्वैत का अर्थ है दो नहीं अर्थात् सब कुछ एक ही है, जिनके अनुसार ब्रह्म (परमात्मा) ही एकमात्र सत्य है तथा परमात्मा–जीवात्मा में कोई भेद नहीं। लल्ली के वाक् में– ''तू ही मैं होकर रहता है, मैं ही तू होकर रहती हूँ, हम दोनों एक हैं''

लल्ली का समय कश्मीर में अशांति का दौर था। हिन्दु मुस्लमानों के बीच भेदभाव की नीतियाँ उत्पन्न कर दी थी। अतः लल्ली ने हिन्दु मुस्लमानों को उपदेश देते हुए कहा– ''शैव छुय थलि थलि रोजान अर्थात् श्शि तो सर्वत्र व्याप्त है, तुम हिन्दु मुस्लमान में भेद कर दिलों को मत बाँटों, अपने आप को पहचानों।''[5]

कबीर या अन्य संत कवियों की तरह लल्लेश्वरी ने गुरू के महत्व को माना है। ब्रह्म की प्राप्ति के लिए गुरू ही सहारा है, हमें परमात्मा की प्राप्ति के लिए व्यक्ति पूजा पर नहीं बल्कि अंतरत्मा झांकने की जरूरत है। लल्ली के वाकों में – ''गुरू ने मुझे उपदेश दिया किन्तु बाहर से अंदर आ, तभी से यह बात मुझे छू गई और मैं विवस्त्र होकर नाचने लगी।'' ऐसा माना जाता है कि विवस्त्र घूमते लल्ली को सूफी संत सैयद अली हमदानी दिखे, तो लल्ली यह कहकर कि मुझे असली पुरूश के दर्शन हुए, नानबाई के तंद में जा छिपी।

साधक जीवन का आरंभ आत्माजिज्ञासा की उत्पति से होती है और परिसामाप्ति आत्मानुभव से। इस दृष्टि से लल्ली सच्चे अर्थो में साधक है। साधक सर्वप्रथम अपने अस्तित्व के बारे में सोचने लगता है कि मैं कौन हूँ, ईश्वर कौन है, मेरा और उसका नाता क्या है ? और तत्वज्ञान की खोज पर निकल पड़ते है। इस पर लल्ली ने अपने वाक् कहा है– ''मै किस दिशा से कौन सी राह से आयी हूँ ? किस रास्ते से कौन सी दिशा को जा रही हूँ ?''[6]

तत्वज्ञान की प्राप्ति के लिए गुरू ही उपाय है। ईश्वर की करूणा से सदगुरू की प्राप्ति होती है और गुरू की कृपा से अंतर में ज्ञानाग्नि् प्रदीप्त हो उठती है। इसलिए लल्ली ने स्वयं को गुरू के भारण में करती है – ''हे मेरे श्रीगुरू मुझे अपनाओ, हे सिद्ध गुरूनाथ, कृपा करके ज्ञान विकास का साधन उपदेश मुझे करो ! अपनी अन्तर भाक्ति मुझ में डाल दो।''[7]

भक्तिकाल में आत्मशुद्धि पर विशेश बल दिया गया। आत्मविमर्श, तपस्या और साधना से मनुश्य का आत्मपरिवार होता है। व्यक्ति के मन की सारी मलिनता साफ होने लगती है। व्यक्ति के मन का अहंकार – अभिमान गलने लगता है, ईर्ष्या, द्वेश छल–प्रपंच का नाश होता है। मन की मलिनता पर लल्ली ने कहा है – ''मनुश्य के सभी व्यवहारों का साधन मन है। द्वेश से मन ही अग्नि जैसा जलता रहता है और बाद में वही अशांति और दुख का कारण बन जाता है, मान अपमान के स्मरण से दुखी रहता है।''[8]

साधक चाहे किसी भी संप्रदाय को अपनाये अथवा किसी भी मार्ग का अनुसरण करें, अंततः सबकी अंतरसाधना और अंतिम सिद्धि समान होती है। उनका मुख्य लक्ष्य है पर मतत्व प्राप्त करना। ''जैसे सूरज क्रम से भेद रहित होकर सर्वस्थानों, सर्व मकानों में समान रूप से अपनी किरणों के साथ प्रवेश करता है। अतः जिस प्रकार मेघ बिना किसी पक्षपात के सर्वत्र जल सिंचन करता है, उसी प्रकार परमतत्व पक्षपात रहित होकर सर्वत्र पूर्णरूप से रहता है।''[9]

भारतीय तत्वज्ञान और आध्यात्मिकता में भौवमत का विशिश्ट स्थान है। लल्ली के वाकों में गीता का सार मिलता है। वह सत्कर्म करने की सीख देती है– ''यियि करन कोरूम, सुय में अरयुग। यानी मैंने जो कर्म किये, वही मेरी अर्चना है, जीभ से जो उच्चारा, वही मेरे मंत्र, देह से यदि कोई काम लिया तो वही प्रत्यभिज्ञा का परिचय था।''[10] इस तरह लल्ली के वाकों में आध्यात्मिक तत्वज्ञान के दस्तावेज है। दुर्भाग्यवश कश्मीर की विदूशी लल्ली के जीवन के बारे में लोकविश्वासों या ऐतिहासिक स्रोतों से कोई विशेश जानकारी प्राप्त न हुई। लल्ली की शिक्षा दीक्षा पिता के घर में हुई। बचपन से ही अध्यात्म रंग में रंग गई। ससुराल में रहते लल्ली ने काफी कश्ट भोगे। इतिहासकारों ने माना है कि लल्ली में यौगिक भाक्तियाँ थी।

लल्लेश्वरी के कुछ वर्शो बाद नंद ऋशि का अविर्भाव हुआ, जो बाद में भोख नरूद्दीन कहलाये। इनके समय तक कश्मीर की सत्तासीन पर सुल्तानों का प्रभुत्व हुआ। इस दौरान फारसी को राज–भाशा का दर्जा मिल गया। इस भाासकीय परिवर्तन के कारण वहाँ की शिक्षा संस्कृति और साहित्य कला पर प्रभाव पड़ना स्वाभाविक थी। संस्कृत और लौकिक भाशा के समानांतर फारसी की छाप अधिक स्पश्टता से दिखाई पड़ने लगी। इस तरह सूफी मत का अविर्भाव हुआ।

भोख नरूद्दीन भी सूफी कवियों में एक थे। वेललाद्यद से बेहद प्रभावित थे। उन्होंने भी कश्मीरियत को बचाये रखने की वकालत की थी। कश्मीरियत आपसी सौहार्द और धार्मिक स्वतंत्रता का ही दूसरा नाम रहा है। नंद ऋशि ने भी कहा है– ''अकिस मोलिस नाजि हेंधन..... यानि हिन्दु–मुस्लमान दोनों एक ही माता पिता की संतान हैं, हे खुदा ! दोनों पर अनुग्रह करो।

लल्ली और नंद ऋशि (शेख नरूद्दीन) की वाकों की संवेदना साभ्यता से भौव धर्म और सूफी मत की समवेत धारा में 'शिवो ऽ हम' और 'अनहलक' एकाकार हो गए। कश्मीर में जो प्रेमाख्यान लिखे गए उन पर सुफी मत का प्रभाव है। ''प्रेमी–प्रेमिका जहाँ जीवात्मा और परमात्मा है, साधना मिलन के लिए आकुलता, विरह की पीड़ा, गुरू महत्व, समुद्र में बूँद और बूँद में समुद्र के सामने का अचरज, यह सब प्रेमी–प्रेमिका के इर्द–गिर्द रची बनी कविताओं, आख्यानों में दृष्टव्य है।''[11]

लल्ली के वाकों में जिस प्रकार आध्यात्मिक तत्वज्ञान की महत्ता है, उसी प्रकार हब्बा खातून की वाकों में प्रेमिका की विरह वेदना का स्वर है। कश्मीर में हब्बा खातून की ख्याति 'बुलबुले कश्मीर' अर्थात् काव्य कोकिला के रूप में हुई है। सोलहवीं भाताब्दी में पांपोर के पास सिंपोर गाँव में जन्मी हब्बा के सुरीली गीत आज भी कश्मीरियों लोक स्मृतियों में सुरक्षित है।

हब्बा खातून का जीवन काफी उतार चढ़ाव तथा कष्टप्रद था। अगर उनकी वैवाहिक जीवन की बात की जाये तो उन्हें भी ललद्यद तथा मीरा जैसी कवियित्रियों की तरह ससुराल में सिर्फ प्रताड़ना मिली। उनका प्रथम विवाह अजीज लोन के साथ हुआ था, लेकिन न उसे पति का प्रेम मिला न सास का प्यार भरा सहानुभूति। अतः वो प्रेम को तरसती रही– ''लद्यो दोन तं ही.... अर्थात् तेरे लिए मैं अनार और जूही के फूलों की माला गूथूँगी प्रिय..... मुझसे दूर क्यों रहते हो ? किस खता के लिए मेरे कोमल मन पर दरांती चला रहे हो ?''

स्त्री की गृहस्थी जीवन का दायित्व, सामाजिक मर्यादा की चुनौतियाँ, स्त्री की सनातन व्यथा को हब्बा ने अपने वैवाहिक जीवन के कड़वे अनुभवों के आधार पर गीतबद्ध किया और मायके से फरियाद की– ''वैरिव्यन सूत्य बार छस नो, चार करू क्यो क्यो मालिन्यो ले..... अर्थात् ओ मेरे मायके वालों! मैं ससुराल में सुखी नहीं हूँ। मुझे इसे दुख से उबार लो। मेरा जीवन असमय ही ढलने लगा है। टीलों–पहाड़ों की चढ़ाई करते हाँफने लगती हूँ..... पनघट पर पानी भरते घड़ा टूट गया। या तो नया घड़ा लेकर दो, न घड़े के पैसे भिजवा दो। ओ मेरे मायके वालों, मेरी मुक्ति का उपाय करो।''[12]

ससुराल से तिरस्कार और पति की निश्ठुरता से हब्बा अकेली सहती रही। काव्य रचना और गायन के साथ साथ गृहस्थी का भार संभाला, ढोर चराने खेतों में काम करने भ जाती है। एकबार उनके करूण गीत सुनकर और रूप सौंदर्य का भाहजादा युसुफ भााह चक उन प मोहित हुए। हब्बा ने दूसरी विवाह युसुफ भााह से की और अजीत लोन के नरक से निकलकर युसुफ भााह के महल में आ गई। ''इतिहासकार बीरबल काचरू ने हब्बा खातून का जिक्र जरूर किया पर उसे रानी नहीं कहा। पर लोकमत के अनुसार वह रानी थी। उसके नाम से कश्मीर में हब्बा खातून की टेकरी प्रसिद्ध है। इतिहासकार मोहम्मद उद्दीन फौक ने लोक कथाओं–लोकगीतों का आकलन करने के बाद हब्बा को रानी घोशित किया।''[13]

हब्बा के जीवन में सुख भरे पल जरूर आये। युसुफ भााह ने उन्हें पलकों पर बिठाया। कश्मीर की सुंदर वादियाँ, घाटियाँ, पहाड़ी, झील झरने उनके प्रेमपूर्ण रूमानी क्षणों की साक्षी है। कहा जाता है कि 'गुलमर्ग' की खोज हब्बा और युसुफ भााह ने ही की थी, जहाँ उनके साँझे कदम पड़ते ही फूलों की घाटियाँ महक उठी।

हब्बा के जीवन में सुखदक्षण भी पहाड़ी बादल की तरह क्षणिक थी। इसी समय मुगल सम्राट अकबर अपने साम्राज्य का विस्तार कश्मीर में भी करना चाहता था। अतः युसुफ भााह को गद्दी से हाथ धोना पड़ा। मुगलों ने युसुफ भााह को लंबे समय तक अपने कैद में रखा। युसुफ भााह के परदेस से ना लौटने पर हब्बा के निरहजन्य करूणा के गीत फूट पड़ती है– ''आ सखीः साजन को ढूँढ़ लाए। जहाँ जहाँ से वह गुजरा उन जगहों पर हो आए। भााायद कहीं मिल जाए। जब से वह मुझसे बिछड़ गया है, मेरी चाँदनी अंधकार में विलीन हो गई है।''[14]

हब्बा खातून का अविर्भाव सूरदास के भ्रमरगीतों और मीरा के कृश्ण–प्रीति की तन्मयता वाले पदों के परिवेश में हुआ। अतः उनकी कविताओं में सूर के भ्रमरगीतों का सामिठास है। हब्बा कश्मीर की पहली कवियित्री है जिसने गीत विधा को अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया और कविता में गीत धारा प्रवाहित की। इस तरह कविता का संगीत के साथ संबंध पुनर्जीवित किया। उनकी कविताएँ राम इराक जैसे रागों में बंधकर लोक स्मृति सदियों तक सुरक्षित रही।

हब्बा की कविता को मीरा की भावात्मक संवेदना का विस्तार मानना गलत न होगा, क्योंकि यहाँ भी प्रणयजन्य विरह वेदना की अभिव्यक्ति हुई है, बस अंतर इतना है कि हब्बा की बिरह वेदना यथार्थ जीवन से जुड़ा है जबकि मीरा का कृश्ण प्रेम अलौकिक है। हब्बा को जीवन का अंतिम क्षण प्रियतम युसुफ भााह के आकुल प्रतीक्षा में बीता है वह मीरा की तरह प्रिय मिलन की आतुरता में बाबरी हो गयी– ''बल खाती बहती नदियों के मुहाने तक जाऊँगी मैं, तुम्हें ढूँढते हुए '' [15]

मनुश्य में प्रेम की आखिरी मंजिल तो उस रहस्यमय भाक्ति में विलीन होना है, जो हम में है, पर माया मोह में इरादे के कारण उससे मिलना नहीं होता। माया जाल कह जाये तो फिर मिलन में कौन सी बाधा ?

हब्बा के संदर्भ में श्री भयामलाल साधू ने उचित ही कहा है कि ''हब्बा खातून कश्मीरी, भाशा में वेदना, अभाव और पीड़ा को स्वर देने वाली प्रथम मानवतावादी और लोकपरक (धर्म निरपेक्ष) कवियित्री) है, जिसमें नाममात्र को भी कृत्रिमता अथवा अस्वाभाविकता नहीं है। उसने अपनी अगाध भावनाओं को उस समय की कविता में प्रचलित रहस्यवादी प्रकृति से प्रेरित नहीं होने दिया।''[16]

निष्कर्श

मध्यकाल में भक्ति आंदोलन से कश्मीर भी अछूता नहीं रह गया। अन्य भारतीय प्रांतों या राज्यों की तरह भक्ति आंदोलन का प्रभाव कश्मीर में जोर भाोर से पड़ा। कश्मीर में कबीर से पहले ही भौव भक्त योगिनी लल्लेश्वरी (लल्ली) का अविर्भाव हुआ, जो कश्मीरी लोकसाहित्य की जननी कहलायी। उन्होंने अपने भक्तिपरक वाकों के जरिये समाज में आध्यात्मिक तत्वज्ञान को प्रसारित किया तथा ब्रह्म की प्राप्ति के लिए साधना पर विशेश बल दिया। ईश्वर की प्राप्ति के लिए बाह्याडंबारों और धार्मिक कर्मकांडो को नकारा।

कश्मीर की सूफी परंपरा भारत ही नहीं, अपितु पूरे विश्व में समृद्ध है। सुफी संतों के प्रचार प्रसार से ही कश्मीर में इस्लाम का आगमन हुआ। लल्लेश्वरी के समय से ही कश्मीर में सूफी संतों का दौर भाुरू होता है। नद ऋशि (शेख नरूदीन) और हब्बा खातून आदि सूफी मत के कवि कवयित्री हुए। इन्होंने अपने वाको के माध्यम हिन्दु मुस्लिमों को एकता के सूत्र में पिरोया। हब्बा खातून ने ही सर्वप्रथम गीत विधा को अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया। इसके बाद की कवियित्रियों के वाकों में भाांति धारा प्रवाहित हुई। उनके गीतों की मधुरता के कारण ही हब्बा के प्रणयजन्य विरह वेदना का स्वर लंबी अवधि कश्मीरी लोकस्मृति सुरक्षित रही। हब्बा के बाद भी काश्मीर में कई कवियित्रियों का अर्विभाव हुआ, इनमें रूपभवानी, अरणिमाल रूचदेद इत्यादि प्रमुख है। इस प्रकार कश्मीरी भक्ति साहित्य में स्त्रियों के अमूल्य योगदान को नकारा नहीं जा सकता। ललेश्वरी, हब्बा खातुन, रूपभवानी तथा अरणिमाल जैसी विदूशियों ने अपनी रचनाओं से कश्मीरी साहित्य को समृद्ध किया। संत कवियित्री लल्ली, हब्बा आदि ने भक्ति साहित्य और धार्मिक दर्शन के माध्यम से यह साबित किया कि नारी केवल घरेलु कमकाज के लिए ही नहीं बल्कि ज्ञान और आध्यात्मिकता की भी संवाहक है।

संदर्भ सूची

1. चन्द्रकांता, मेरे भोजपत्र, अमन प्रकाशन, कानपुर सन् 2024, पृश्ठ सं0 87
2. चन्द्रकांता, मेरे भोजपत्र, अमन प्रकाशन, कानपुर सन् 2024, पृश्ठ सं0 87
3. अनुवादक– स्वामी मुक्तानंद परमहंस, लल्लयोगेश्वरी की वाणी, विनोद प्रिंटिंग सर्विस, भााहटरा, दिल्ली, पृश्ठ सं0 6
4. चन्द्रकांता, मेरे भोजपत्र, अमन प्रकाशन, कानपुर सन् 2024, पृश्ठ सं0 87
5. चन्द्रकांता, मेरे भोजपत्र, अमन प्रकाशन, कानपुर सन् 2024, पृश्ठ सं0 88
6. अनुवादक– स्वामी मुक्तानंद परमहंस लल्लयोगेश्वरी की वाणी, विनोद प्रिंटिंग सर्विस, भााहदरा, दिल्ली पृश्ठ सं0 13
7. अनुवादक– स्वामी मुक्तानंद परमहंस लल्लयोगेश्वरी की वाणी, विनोद प्रिंटिंग सर्विस, भााहदरा, दिल्ली पृश्ठ सं0 14
8. अनुवादक– स्वामी मुक्तानंद परमहंस लल्लयोगेश्वरी की वाणी, विनोद प्रिंटिंग सर्विस, भााहदरा, दिल्ली पृश्ठ सं0 19
9. अनुवादक– स्वामी मुक्तानंद परमहंस लल्लयोगेश्वरी की वाणी, विनोद प्रिंटिंग सर्विस, भााहदरा, दिल्ली पृश्ठ सं0 18
10. चन्द्रकांता, मेरे भोजपत्र, अमन प्रकाशन, कानपुर सन् 2024, पृश्ठ सं0 88
11. चन्द्रकांता, मेरे भोजपत्र, अमन प्रकाशन, कानपुर सन् 2024, पृश्ठ सं0 91
12. चन्द्रकांता, मेरे भोजपत्र, अमन प्रकाशन, कानपुर सन् 2024, पृश्ठ सं0 92
13. चन्द्रकांता, मेरे भोजपत्र, अमन प्रकाशन, कानपुर सन् 2024, पृश्ठ सं0 93
14. चन्द्रकांता, मेरे भोजपत्र, अमन प्रकाशन, कानपुर सन् 2024, पृश्ठ सं0 93
15. अनुवादक– सुरेश सालिल, मधु भार्मा, हब्बा खातून और अरणिमाल के गीत गान, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली पृश्ठ सं0 16
16. अनुवादक– सुरेश सालिल, मधु भार्मा, हब्बा खातून और अरणिमाल के गीत गान, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली पृश्ठ सं0 10